पाठ 14

लोकगीत

(इस पाठ में लेखक ने लोकगीतों तथा लोकनृत्यों के सांस्कृतिक महत्त्व पर प्रकाश डाला है |)

लोकगीत अपनी लोच, ताजगी और लोकप्रियता में शास्त्रीय और देशी दोनों प्रकार के संगीत से भिन्न है| लोकगीत सीधे जन सामान्य के गीत हैं| घर, गाँव और नगर की जनता के गीत हैं ये | इनके लिए साधना की आवश्यकता नहीं होती | त्योहारों और विशेष अवसरों पर ये गाये जाते हैं| इनको रचने वाले भी अधिकतर अनपढ़, गाँव के लोग ही हैं| स्त्रियों ने भी इनकी रचना में विशेष भाग लिया है| ये गीत बाजों की मदद के बिना ही या साधारण ढोलक, झांझ, करताल, बांसुरी आदि की सहायता से गाये जाते हैं|

अनेक लोगों ने विविध बोलियों के लोक साहित्य और लोकगीतों के संग्रह पर कमर कसीहै और इस प्रकार के अनेक संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं| प्रान्तों की विविध सरकारों ने भी लोक साहित्य के पुनरुद्धार में हाथ बंटाया है और सभी राज्यों में इस सम्बन्ध का एक विभाग चालू कर दिया है या सार्वजनिक अधिवेशन, पुरस्कार आदि द्वारा इसका प्रोत्साहन, प्रचार और वृद्धि शुरू कर दी है|

लोकगीतों के कई प्रकार हैं| इनका एक प्रकार तो बड़ा ही ओजस्वी और सजीव है| यह इस देश के आदिवासियों का संगीत है| मध्यप्रदेश, दक्षिण, छोटा नागपुर में गोंड - खांड, ओराँव - मुंड, भील - संथाल आदि फैले हुए हैं, जिनमें आज भी जीवन, नियमों की जकड में बंध न सका और वह निर्द्वंद लहराता है| इनके गीत और नृत्य अधिकतर साथ साथ

और बड़े बड़े दलों में गाये और नाचे जाते हैं| आदमियों और औरतों के दल एक साथ या एक दूसरे के जवाब में गाते हैं, दिशायें गूँज उठती हैं|

पहाड़ी प्रदेशों के अपने - अपने गीत हैं| उनके अपने - अपने भिन्न रूप होते हुए भी अशास्त्रीय होने के कारण उनमें अपनी एक सामान भूमि है| गढ़वाल, किन्नौर, काँगड़ा आदि के अपने-अपने गीत और उन्हें गाने की अपनी-अपनी विधियाँ हैं। उनका अलग नाम ही पड़ गया है- 'पहाड़ी'।

वास्तविक लोकगीत देश के गाँवों और देहात में हैं। इनका सम्बन्ध देहात की जनता से है। बड़ी जान होती है इनमें। चैता, कजरी, बारहमासा, सावन आदि मिर्जापुर, बनारस और उत्तर प्रदेश के पूर्वी और बिहार के पश्चिमी जिलों में गाये जाते हैं। बाउल और भटियाली बंगाल के लोकगीत हैं। पंजाब में माहिया भी इसी प्रकार के हैं। हीर-राँझा, सोहनी-महीवाल सम्बन्धी गीत पंजाबी में और ढोला-मारू आदि के गीत राजस्थानी में बड़े चाव से गाये जाते हैं। इन देहाती गीतों के रचयिता कोरी कल्पना को इतना मान न देकर अपने गीतों के विषय रोजमर्रा के जीवन से लेते हैं, जिससे वे सीधे मर्म का स्पर्श करते हैं। उनके राग भी साधारणतः पीलू, सारंग, दुर्गा, सावन, सोरठ आदि हैं। ये सभी लोकगीत गाँवों और इलाकों की बोलियों में गाये जाते हैं। लोकगीत की भाषा नित्य की बोली होने के कारण बड़ी आह्लादकर और आनन्ददायक होती है। राग तो इन गीतों के आकर्षक होते ही हैं, इनकी समझी जा सकने वाली भाषा भी इनकी सफलता का कारण है।

भोजपुरी में पिछले अनेक वर्षों से 'विदेशिया' का खूब प्रचार हुआ है। गानेवालों के अनेक दल इन्हें गाते हैं। उधर के भागों में विशेषकर बिहार में विदेशिया से बढ़कर दूसरे गाने लोकप्रिय नहीं है। इन गीतों में अधिकतर रसिकों की बात रहती है और इनसे करुणा और विरह का जो रस बरसता है, उसका वर्णन नहीं किया जा सकता है।

जंगल की जातियों के अलावा गाँव के लोगों के गीत होते हैं, जो बिरहा आदि में गाये जाते हैं। जिसमें पुरुष एक ओर और महिलाएँ दूसरी ओर एक दूसरे के जवाब में दल बाँधकर गाते हंै। और दिशाएँ गुँजा देते हैं। पर इधर कुछ काल से इस प्रकार के दलीय गायन का ह्रास हुआ है।

दूसरे प्रकार के बड़े लोकप्रिय गाने 'आल्हा' हैं। अधिकतर ये बुन्देलखंडी में गाये जाते हैं। आरम्भ तो इनका चन्देल राजाओं के राजकवि जगनिक से माना जाता है, जिसने आल्हा-ऊदल की वीरता का बखान किया। उनके छन्द और विषय को लेकर लोकबोली में उसके दूसरे देहाती कवियों ने भी समय-समय पर अपने गीतों में उतारा और ये गीत हमारे गाँवों में आज भी बहुत प्रेम से गाये जाते हैं।

इनको गाने वाले गाँव-गाँव ढोलक लिये गाते फिरते हैं। इसकी सीमा पर उन गीतों का भी स्थान है, जिन्हें नट रस्सियों पर खेल करते हुए गाते हैं। अधिकतर ये गद्य-पद्यात्मक हैं और इनके अपने बोल हैं। अपने देश में स्त्रियों के गीतों की अनन्त संख्या है। ये गीत भी लोकगीत हैं, पर अधिकतर इन्हें औरतें ही गाती हैं। इन्हें सिरजती भी अधिकतर वही हैं। वैसे इन्हें रचने वाले या गाने वाले पुरुषों की भी कमी नहीं है, पर इन गीतों का सम्बन्ध विशेषतः स्त्रियों से है। इस दृष्टि से भारत इस दिशा में सभी देशों से भिन्न है, क्योंकि संसार के अन्य देशों में स्त्रियों के अपने गीत पुरुषों या जनगीतों से भिन्न नहीं हैं, मिले-जुले ही हैं।

त्योहारों पर नदियों में नहाते समय के, नहाने जाते हुए राह के, विवाह के, मटकोड़, ज्यौनार के, सम्बन्धियों के लिए प्रेम-युक्त गाली के, जन्म आदि सभी अवसरों के अलग-अलग गीत हैं, जो स्त्रियाँ गाती हैं। इन अवसरों पर कुछ आज से ही नहीं, बड़े प्राचीनकाल से वह गाती रही हैं। महाकवि कालिदास आदि ने भी अपने ग्रन्थों में उनके गीतों का हवाला दिया है। सोहर, बानी, सेहरा आदि उनके अनन्त गानों में से कुछ हैं। वैसे तो बारहमासे पुरुषों के साथ नारियाँ भी गाती हैं।

एक विशेष बात यह है कि नारियों के गाने साधारणतः अकेले नहीं गाये जाते, दल बाँधकर गाये जाते हैं। अनेक कंठ एक साथ फूटते हैं। यद्यपि अक्सर उनमें मेल नहीं होता, फिर भी त्योहारों और शुभ अवसरों पर वे बहुत ही भले लगते हैं। गाँवों और नगरों में गानेवालियाँ

भी होती हैं, जो विवाह, जन्म आदि के अवसरों पर गाने के लिए बुला ली जाती हैं। बिहार और पूर्वी उत्तरप्रदेश में छठ पर्व बड़े धूम-धाम से मनाया जाता है। इसके गीत बड़े मोहक और लोचदार होते हैं।

सभी ऋतुओं में स्त्रियाँ उल्लसित होकर दल बाँधकर गाती हैं पर होली, बरसात की कजरी आदि तो उनकी अपनी चीज है,जो सुनते ही बनती है। पूरब की बोलियों में अधिकतर मैथिल-कोकिल विद्यापति के गीत गाये जाते हैं। पर सारे देश में -कश्मीर से कन्या कुमारी-केरल तक और काठियावाड़-गुजरात- राजस्थान से उड़ीसा-आन्ध्र तक-सभी के अपने-अपने विद्यापति हैं।

स्त्रियाँ ढोलक की मदद से गाती हैं। अधिकतर उनके गाने के साथ नाच का भी पुट होता है। गुजरात का एक प्रकार का दलीय गायन 'गरबा' है, जिसे विशेष विधि से औरतें घेरे में घूम-घूमकर गाती हैं। साथ ही लकड़ियाँ भी बजाती हैं। इसमें नाच-गान साथ-साथ चलते हैं। वस्तुतः यह नाच ही है। सभी प्रान्तों में यह लोकप्रिय हो चला है। इसी प्रकार होली के अवसर पर ब्रज में 'रसिया' चलता है, जिसे दल के दल गाते हैं, स्त्रियाँ विशेषकर।

गाँव के गीतों के वास्तव में अनन्त प्रकार हैं। जीवन जहाँ इठला-इठलाकर लहराता है, वहाँ भला आनन्द के स्रोतों की कमी हो सकती है? वहाँ के अनन्त संख्यक गाने उद्दाम ग्रामीण जीवन के ही प्रतीक हैं।

- डॉ0

भगवतशरण उपाध्याय

डॉ0 भगवतशरण उपाध्याय का जन्म सन् 1910 ई0 में बलिया में हुआ। आपने प्राचीन भारत के ऐतिहासिक तथ्यों एवं भारतीय संस्कृति पर विशेष दृष्टिकोण से अध्ययन किया है और मौलिक साहित्यिक कृतित्व के रूप में कुछ संस्मरण, फीचर और निबन्धों की रचना की है। आपका गद्य भावुकतापूर्ण और आलंकारिक है।

शब्दार्थ

पुनरुद्धार = जिसका दोबारा उद्धार किया जाये। **ओजस्वी** = तेजवान। **निद्र्वन्द्व** = द्वन्द्व रहित, (सब तरह से स्वच्छन्द) **बारहमासा** = चैत्र से लेकर फाल्गुन तक के बारह महीनों का एक गीत। **आह्लादकर** = प्रसन्नता देने वाली। **सिरजती** = रचती, बनाती। **मटकोड़** = विवाह के समय मिट्टी खोदने की एक रस्म। **ज्यौनार** = विवाह के समय खाना खाने की रस्म। **कंठ** = गला। **उद्दाम** = उच्छृंखल, निरंकुश।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1. निम्नांकित अनुच्छेद को ध्यान से पढ़िए और अपने साथियों से पूछने के लिए पाँच प्रश्न बनाइए -

"भारतीय आर्केस्ट्रा के योग से भी लोकगीत गाये जाते हैं। इन्हें एक या अनेक लोग मिलकर गाते हैं। अधिकतर एक लड़का और लड़की एक दूसरे के जवाब के रूप में या

एक साथ मिलकर भी इन्हें गाते हैं। इस प्रकार के गीत वस्तुतः 'पश्चिम' और नये भारत के मिले-जुले प्रयास हैं। मधुर, तेज या ढीले, कृत्रिम स्वर में ये गीत गाये जाते हैं। यद्यपि ये शास्त्र की दृष्टि से नगण्य हैं तथापि अब काफी लोकप्रिय हो गये हैं। ये देशी-विदेशी और अशास्त्रीय-गँवारू गानों के बिगड़े रूप हैं।

2. अपनी दादी/नानी तथा पास-पड़ोस की महिलाओं से पूछकर कुछ लोकगीत संकलित करें तथा उन्हीं से जानकारी करें कि ये किस अवसर पर गाये जाते हैं?

3. शिक्षक की सहायता से एक ऐसी 'बाल सभा' का आयोजन करें, जिसमें कक्षा के सभी छात्र केवल 'लोकगीत' ही प्रस्तुत करें।

विचार और कल्पना

1. लोकगीतों में लोगों की दिलचस्पी कम होने से हमें क्या क्षति हो सकती है। इन्हंे बढ़ावा देने के लिए हमें क्या करना चाहिए?

2. देश के प्रत्येक क्षेत्र के लोकगीत अलग-अलग होते हैं किन्तु सभी का मूल भाव एक ही होता है जो अनेकता में एकता को व्यक्त करता है। बताइए कि और कौन से घटक होते हैं जो देश की अनेकता में एकता को व्यक्त करते हैं।

निबन्ध से

1. कव्वाली के अलावा कौन से गीत हैं, जिनमें टोली बनाकर प्रतिस्पर्धा आयोजित की जाती है?

2. हमारे यहाँ महिलाएँ कब-कब किस प्रकार के गीत गाती हंै, उन गीतों को कौन-सा गीत कहा जाता है ?

3. लोकगीत हमारे देश के किन-किन क्षेत्रों में अधिक लोकप्रिय हैं तथा इसकी क्या विशेषताएँ हैं?

4. लोकगीत किन-किन रागों पर आधारित होते हैं?

5. सोहर, चैता तथा कजरी कब-कब गाये जाते हैं?

भाषा की बात

1. पाठ में 'पुनरुद्धार' शब्द आया है, जो दो शब्दों-पुनः+उद्धार से मिलकर बना है। इसी आधार पर निम्नांकित शब्दों का सन्धि-विच्छेद कीजिए-

पुनरावृत्ति, पुनर्जन्म, पुनर्बोध, पुनरागमन, पुनरुक्ति।

2. 'सर्वजन' शब्द में 'इक' प्रत्यय लगाकर 'सार्वजनिक' शब्द बना है। इसी प्रकार निम्नांकित शब्दों में 'इक' प्रत्यय लगाकर शब्द बनाइए-

सप्ताह, वर्ष, समाज, धर्म, मर्म।

आंचलिक लोकगीत

1. बुन्देलखंडी

जंगल में मंगल मनालो,

हरे-भरे बिरछा लगालो।।

जितै-जितै धरती है बिरछा बिहीनी,

जैसे सिन्दूर बिना माँग लगै सूनी,

ईखौ, सुहागन बनालो, हरे-भरे बिरछा लगालो।

जंगल में मंगल.....।

मीठे फल-फूल लगैं, झूम रई डरइयौं

भर दुपेरे इनपै, चल रई कुलइयाँ,

मिल-जुल के इन खौ, बचालो, हरे-भरे बिरछा लगालो।

जंगल में मंगल .....।

2. भोजपुरी

घेरि-घेरि बरसै कारी बदरिया, कियरिया में बूँद टपके।

हरियर भइल देखा पूरा सिवनवाँ,

खुशहाल होई गइलैं सगरा किसनवाँ,

धरती पहिन लेहलीं धानी रंग चुनरिया, कियरिया में बूँद टपके।

अमवाँ की डारी पे कुँहके कोइलिया,

मोरवा-मोरिनियाँ करैलें अठखेलियाँ,

धीरे-धीरे चलै पुरबी बयरिया, कियरिया में बूँद टपके।